

विन्ध्येश्वरी चालोसा

दोहा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज में, करती नहीं विलम्ब॥

चौपाई 1

जय जय जय विन्ध्याचल रानी।
आदि शक्ति जगविदित भवानी॥

चौपाई 2

सिंह वाहिनी जय जगमाता।
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता॥

चौपाई 3

कष्ट निवारिनि जय जग देवी।
जय जय सन्त असुर सुरसेवी॥

चौपाई 4

महिमा अमित अपार तुम्हारी।
शेष सहस मुख बरनत हारी॥

चौपाई 5

दीनन के दुख हरत भवानी।
नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥

चौपाई 6

सब कर मनसा पुरवत माता।
महिमा अमित जगत विख्याता॥

चौपाई 7

जो जन ध्यान तुम्हारो लावे।
सो तुरतहिं वांछित फल पावे॥

चौपाई 8

तू ही वैष्णवी तू ही रुद्रानी।
तू ही शारदा अरु ब्रह्मानी॥

चौपाई 9

रमा राधिका श्यामा काली।
तू ही मात सन्तन प्रतिपाली॥

चौपाई 10

उमा माधवी चण्डी ज्वाला।
वेगि मोहि पर होहु दयाला॥

चौपाई 11

तुम ही हिंगलाज महरानी।
तुम ही शीतला अरु विज्ञानी॥

चौपाई 12

तुम्हीं लक्ष्मी जग सुख दाता।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनि माता॥

चौपाई 13

तुम ही जाह्नवी अरु उन्नानी।
हेमावती अम्बे निरबानी॥

चौपाई 14

अष्टभुजी वाराहिनि देवा।
करत विष्णु शिव जाकर सेवा॥

चौपाई 15

चौसट्टी देवी कल्यानी।
गौरि मंगला सब गुन खानी॥

चौपाई 16

पाटन मुंबा दन्त कुमारी।
भद्रकाली सुन विनय हमारी॥

चौपाई 17

वज्रधारिनी शोक नाशिनी।
आयु रक्षिनी विन्ध्यवासिनी॥

चौपाई 18

जया और विजया बैताली।
मातु संकटी अरु विकराली॥

चौपाई 19

नाम अनन्त तुम्हार भवानी।
बरनै किमि मानुष अज्ञानी॥

चौपाई 20

जापर कृपा मातु तव होई।
तो वह करै चहै मन जोई॥

चौपाई 21

कृपा करहु मोपर महारानी।
सिध करिये अब यह मम बानी॥

चौपाई 22

जो नर धरै मातु कर ध्याना।
ताकर सदा होय कल्याना॥

चौपाई 23

विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै।
जो देवी का जाप करावै॥

चौपाई 24

जो नर कहे ऋण होय अपारा।
सो नर पाठ करे शतबारा॥

चौपाई 25

निश्चय ऋणमोचन होइ जाई।
जो नर पाठ करे मन लाई॥

चौपाई 26

अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावै।
या जग में सो बहु सुख पावै॥

चौपाई 27

जाको व्याधि सतावै भाई।
जाप करत सब दूर पराई॥

चौपाई 28

जो नर अति बन्दी महँ होई।
बार हजार पाठ कर सोई॥

चौपाई 29

निश्चय बन्दी ते छुटि जाई।
सत्य वचन मम मानहु भाई॥

चौपाई 30

जापर जो कुछ संकट होई।
निश्चय देविहि सुमिरै सोई॥

चौपाई 31

जा कहँ पुत्र होय नहिं भाई।
सो नर या विधि करै उपाई॥

चौपाई 32

पाँच वर्ष सो पाठ करावै।
नौरातर महँ विप्र जिमावै॥

चौपाई 33

निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी।
पुत्र देहिं ताकहँ गुन खानी॥

चौपाई 34

ध्वजा नारियल आन चढ़ावै।
विधि समेत पूजन करवावै॥

चौपाई 35

नित प्रति पाठ करै मन लाई।
प्रेम सहित नहिं आन उपाई॥

चौपाई 36

यह श्री विन्ध्याचल चालीसा।
रंक पढ़त होवै अवनीसा॥

चौपाई 37

यह जनि अचरज मानहु भाई।
कृपा दृष्टि जापर है जाई॥

चौपाई 38

जय जय जय जग मातु भवानी।
कृपा करहु मोहि पर जन जानी॥